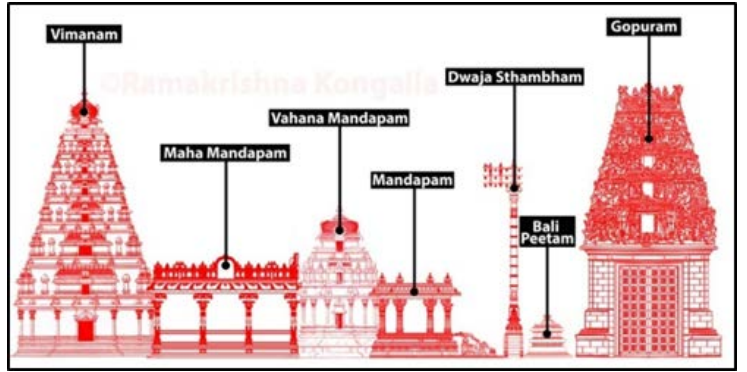




पल्लव वास्तुकला

संदर्भ: विल्लुपुरम जिले के पनमलाई में 1,300 साल पुराने तालगिरेश्वर मंदिर में प्राचीन पल्लव काल की पेंटिंग्स उपेक्षा के कारण काफी क्षतिग्रस्त हो गई हैं।

- **रॉक-कट से संरचनात्मक मंदिरों में संक्रमण:** पल्लव वास्तुकला में रॉक-कट मंदिरों से पत्थर-निर्मित मंदिरों में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ। प्रारंभिक पल्लव कला, जो 7वीं शताब्दी ईस्वी की है, में मुख्य रूप से चट्टानों को काटकर बनाए गए मंदिर शामिल हैं, जबकि, 8वीं और 9वीं शताब्दी में निर्मित मंदिर संरचनात्मक मंदिर हैं।
- **प्रमुख पल्लव शासक और उनके योगदान:**
 - **महेन्द्रवर्मन:** वह मंदगापट्टू (Mandagapattu) रॉक-कट मंदिर के लिए जाने जाते हैं।
 - **राजसिम्हा (नरसिम्हमवरमन/कलासमुद्र/मामल्ल):** उन्होंने कांचीपुरम में कैलासनाथर मंदिर और महाबलीपुरम (मामल्लपुरम) में प्रतिष्ठित शोर मंदिर जैसे प्रमुख मंदिरों का निर्माण करवाया।
- **एकाशम मंदिर:** पल्लव काल में पांच रथ जैसे एकाशम मंदिरों का निर्माण हुआ। ये मंदिर ग्रेनाइट के एकल खंडों से बनाए गए थे और उस समय के असाधारण मूर्तिकला कौशल का प्रदर्शन करते थे।
- **बौद्ध प्रभाव:** मामल्लपुरम में कुछ रॉक-कट मंदिर बौद्ध रॉक-कट गुफाओं के प्रभाव को दर्शाते हैं। रथ मंदिरों में, चैत्य और विहार दोनों प्राकृतिक रूप से देखे जा सकते हैं, जो बौद्ध स्थापत्य शैली को दर्शाते हैं।
- **एकाशम वास्तुकला:** रथ मंदिर, जिन्हें सात पैगोडा के रूप में भी जाना जाता है, भारत में एकाशम वास्तुकला के बेहतरीन उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।
- **गवाक्ष आकृति:** गवाक्ष आकृति, एक प्रतीकात्मक खिड़की होती थी जिसके माध्यम से देवताओं को देखा जाता था। यह पल्लव वास्तुकला की एक विशिष्ट विशेषता है।
- **द्रविड़ शिखर और कलश:** पल्लव मंदिरों में द्रविड़ शिखर का विकास हुआ, जिसमें वर्गाकार आधार और खुले बरामदे थे। कुम्भ (मेलन कैपिटल) और कलश (फिनियल) के वास्तुशिल्पीय रूपांकनों की उत्पत्ति पल्लव वास्तुकला से हुई है।
- **यालिस और शेर की आकृति:** कुछ संरचनात्मक मंदिरों में स्तंभों के आधार पर यालिस (Yalis) की आकृति बनी हुई है, जो बाद में पल्लवों का शाही प्रतीक चिन्ह बन गया। इस रूपांकन को बाद में चोलों द्वारा चित्रित किया गया।
- **कुदुस और अलंकरण:** पल्लव मंदिरों में दीवारों के अग्रभाग अक्सर बौद्ध चैत्य रूपांकन कुदुस को प्रदर्शित करते हैं। गुफा मंदिरों और संरचनात्मक मंदिरों दोनों में सजावट और अलंकरण प्रमुख हैं।
- **स्तंभों के डिजाइनों का विकास:** पल्लव वास्तुकला में स्तंभों को विकास के तीन चरणों में वर्गीकृत किया जा सकता है, प्रत्येक में अपनी विशिष्ट विशेषताएं और रूपांकन हैं।
- **क्षेत्रीय प्रभाव:** महाबलीपुरम में एक रथ की तरह, कुछ पल्लव वास्तुकला क्षेत्रीय प्रभावों को दर्शाती है, जैसे कि पारंपरिक बंगाली झोपड़ी। इससे पता चलता है कि द्रविड़ शिखर की उत्पत्ति बांस की झोपड़ी के डिजाइनों से हो सकती है।
- **गोपुरम की शुरुआत:** गोपुरम की वास्तुशिल्पीय अवधारणा, जो दक्षिण भारत के कई मंदिरों में एक स्मारकीय प्रवेश द्वार है, पल्लव वंश के साथ शुरू हुई। इसके शुरुआती रूप महाबलीपुरम के शोर मंदिर में देखे जा सकते हैं।
- **शैल-कट रिलीफ:** पल्लव काल की सबसे महत्वपूर्ण मूर्तिकला उपलब्धियों में से एक मामल्लपुरम में क्लेफ्ट की नक्काशी है, जिसे अर्जुन की तपस्या या गंगा का अवतरण के रूप में जाना जाता है। इस रिलीफ में विभिन्न देवताओं, अर्ध-देवताओं और किन्नरों को दर्शाया गया है।
- **अमरावती स्कूल ऑफ आर्ट का प्रभाव:** महाबलीपुरम में पल्लव रिलीफ मूर्तियां अमरावती स्कूल ऑफ आर्ट के प्रभाव को दर्शाती हैं, खासकर देवताओं को बादल जैसी आकृतियों में दर्शाने में।
- **प्रारंभिक चित्र मूर्तियां:** अदिवराह गुफा में, दो चित्र हैं जो माना जाता है कि पल्लव राजाओं के हैं, जिनके साथ उनके परिवार के सदस्य हैं। ये भारत में ज्ञात सबसे प्रारंभिक चित्र मूर्तियों में से हैं।
- **शैववाद और वैष्णववाद के चित्रण:** पल्लव कला में अक्सर शैववाद और वैष्णववाद से संबंधित देवताओं और कहानियों के चित्रण होते हैं, जैसे कि वराह द्वारा पृथ्वी देवी को उठाना और देवी दुर्गा के दृश्य।



यहोवा (Jehovah) के साक्षी

संदर्भ: कोच्चि के पास यहोवा के साक्षियों के एक संप्रदाय के रविवार के प्रार्थना सम्मेलन में हुए एक श्रृंखलाबद्ध विस्फोटों के कारण दो लोगों की जान चली गई और कई लोग घायल हो गए।

- यहोवा के साक्षी एक ईसाई संप्रदाय है, जिसकी विशिष्ट मान्यताएं मुख्यधारा के ईसाई धर्म से भिन्न हैं।
- वे पवित्र त्रिमूर्ति के सिद्धांत का पालन नहीं करते हैं, बल्कि यहोवा को एक सच्चे और सर्वशक्तिमान ईश्वर, सृष्टिकर्ता के रूप में पूजते हैं।
- यहोवा के साक्षी यीशु मसीह को "स्वर्ग में परमेश्वर के राज्य के राजा" के रूप में मानते हैं, लेकिन सर्वशक्तिमान ईश्वर के रूप में नहीं।
- उनकी धार्मिक मान्यताएं केवल बाइबल पर आधारित हैं, जिसे वे परमेश्वर का वचन मानते हैं।
- वे क्रिसमस या ईस्टर नहीं मनाते हैं, क्योंकि वे इसे बुतपरस्त मूल के रूप में देखते हैं।
- उनका मानना है कि दुनिया का अंत निकट है और वे मानव सरकारों को बदलने और पृथ्वी के लिए परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करने के लिए "परमेश्वर के राज्य" की स्थापना की उम्मीद करते हैं।
- इस संप्रदाय की उत्पत्ति 1870 के दशक में अमेरिकी पादरी चार्ल्स टैज रसेल द्वारा शुरू किए गए एक बाइबल स्टूडेंट आंदोलन से हुई है।

Face to Face Centres





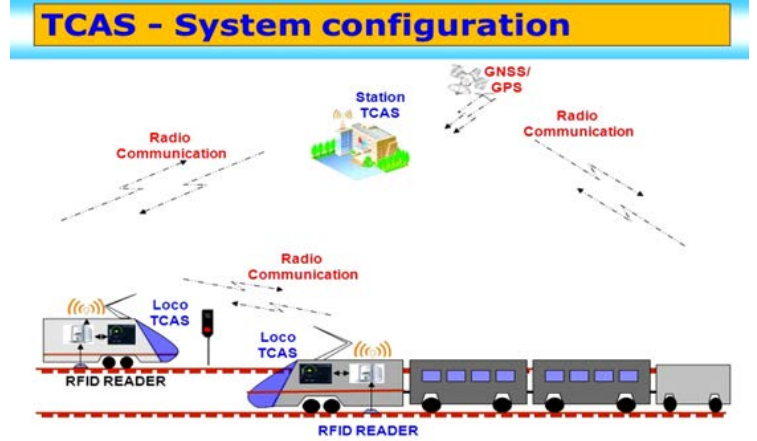
30 October, 2023

- यहोवा के साक्षियों के शासी निकाय का मुख्यालय वारविक, न्यूयॉर्क में स्थित है।
- संप्रदाय के सिद्धांतों को प्रसारित करने के लिए जिम्मेदार प्राथमिक संगठन वॉच टावर बाइबल और ट्रैक्ट सोसाइटी ऑफ पेनसिल्वेनिया है, जिसका मुख्यालय भी वारविक में है।
- **भारत में यहोवा के साक्षी**
 - भारत में लगभग 56,747 मंत्री हैं जो यहोवा के साक्षियों के रूप में बाइबल पढ़ाते हैं।
 - यहोवा के साक्षी 1905 से भारत में मौजूद हैं, मुंबई में 1926 में एक आधिकारिक कार्यालय स्थापित किया गया और 1978 में कानूनी पंजीकरण प्राप्त किया गया।
 - वे भारत में संवैधानिक गारंटी से लाभान्वित होते हैं, जिसमें अपने धर्म का पालन करने, और प्रचार करने का अधिकार शामिल है।
 - 1986 में एक ऐतिहासिक मामले में, भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने उन यहोवा के साक्षी बच्चों को सुरक्षा प्रदान की, जिन्होंने संविधान के अनुच्छेद 25 के तहत धार्मिक स्वतंत्रता के उनके मौलिक अधिकार के उल्लंघन का हवाला देते हुए अपने स्कूल में राष्ट्रगान गाने में भाग नहीं लिया था।
 - 2020 में, नाइजीरिया के एक यहोवा के साक्षी को रोगी की धार्मिक मान्यताओं को समायोजित करने के लिए रक्त या रक्त उत्पादों के उपयोग के बिना बेंगलुरु के एक अस्पताल में जीवित यकृत प्रत्यारोपण प्राप्त हुआ।
 - सुप्रीम कोर्ट के बिजो इमैनुएल फैसले में यहोवा के साक्षियों की अजीब मान्यताओं और प्रथाओं का संदर्भ दिया गया, जिसमें मतदान के खिलाफ उनका रुख, सार्वजनिक पद धारण करना, सशस्त्र बलों में सेवा करना, झंडे को सलामी देना, राष्ट्रगान के लिए खड़ा होना और निष्ठा की प्रतिज्ञा शामिल है।
 - फैसले में यहोवा के साक्षियों और सरकारों के बीच उनकी धार्मिक मान्यताओं के कारण झड़पों के अंतरराष्ट्रीय उदाहरणों पर भी प्रकाश डाला गया, जिसके परिणामस्वरूप मुकदमे, हिंसा, कारावास, यातना और मौत हुईं।
 - यहोवा के साक्षियों की मान्यताओं और प्रथाओं के कारण संयुक्त राज्य अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया सहित विभिन्न देशों में कानूनी चुनौतियाँ पैदा हुई हैं।

ट्रेन टक्कर बचाव/परिहार प्रणाली (टीसीएस)

संदर्भ: आंध्र प्रदेश में दो ट्रेनों के हालिया टक्कर ने ट्रेन टक्कर परिहार प्रणाली (टीसीएस) के महत्व को उजागर किया है, जिसे भारत में कवच कहा जाता है।

- **विकास:** कवच, जिसे मूल रूप से ट्रेन टक्कर परिहार प्रणाली (टीसीएस) के रूप में जाना जाता था, एक स्वदेशी परियोजना है जो 2012 से भारत में संचालित की जा रही है।
- **प्रणाली घटक:** कवच एक परिष्कृत रेलवे सुरक्षा प्रणाली है जो इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों और रेडियो फ्रीक्वेंसी आइडेंटिफिकेशन (आरएफआईडी) तकनीक को एकीकृत करती है। इन घटकों को लोकोमोटिव, सिग्नलिंग सिस्टम और रेलवे पटरियों के साथ स्थापित किया जाता है।
- **कार्यक्षमता:** कवच अपने विभिन्न घटकों के बीच अल्ट्रा-हाई रेडियो फ्रीक्वेंसी का उपयोग करके संचार स्थापित करती है। यह संचार प्रणाली इसे प्री-प्रोग्रामेड लॉजिक और सुरक्षा मापदंडों के आधार पर ट्रेन ब्रेक को नियंत्रित करने और ट्रेन चालकों को वास्तविक समय में अलर्ट प्रदान करने की अनुमति देता है।
- **सुरक्षा मानक:** कवच उच्चतम सुरक्षा और विश्वसनीयता मानक का पालन करता है, जिसे सेफ्टी इंटीग्रेटी लेवल (एसआईएल) 4 के रूप में जाना जाता है। दुर्घटनाओं को रोकने और सिस्टम की निर्भरता सुनिश्चित करने के लिए यह मानक आवश्यक है।
- **मौजूदा प्रणालियों से प्रेरणा:** कवच में अच्छी तरह से स्थापित रेलवे सुरक्षा प्रणालियों, जैसे कि यूरोपीय ट्रेन सुरक्षा और चेतावनी प्रणाली के तत्व शामिल हैं। इसमें भारत के अपने एंटी-कोल्लिशन डिवाइस की विशेषताएं भी शामिल हैं।
- **वैश्विक अनुकूलता:** कवच को दुनिया भर में अन्य रेलवे सुरक्षा प्रणालियों के साथ संगत बनाने के प्रयास चल रहे हैं। यह अनुकूलन क्षमता इसे एक निर्यात योग्य प्रौद्योगिकी के रूप में स्थान देती है, जो संभावित रूप से मौजूदा प्रणालियों के लिए एक लागत प्रभावी विकल्प प्रदान करती है।
- **सहयोगी विकास:** कवच भारतीय रेलवे (आईआर) के तहत अनुसंधान डिजाइन और मानक संगठन (आरडीएसओ) और मेधा सर्वो ड्राइव्स प्राइवेट लिमिटेड, एचबीएल पावर सिस्टम्स लिमिटेड और कर्नेक्स माइक्रोसिस्टम्स सहित निजी कंपनियों के बीच सहयोग का परिणाम है।
- **भविष्य के लिए प्रमाण:** योजनाओं में कवच को 4जी लॉन्ग टर्म इवोल्यूशन (एलटीई) तकनीक के साथ संगत बनाने के लिए अनुकूलित करना शामिल है ताकि यह तकनीकी प्रगति के साथ प्रभावी बना रहे।
- **सुरक्षा वृद्धि:** कवच का प्राथमिक उद्देश्य ट्रेन टक्करों को रोककर, दुर्घटनाओं को कम करके और समग्र परिचालन सुरक्षा में सुधार करके रेलवे सुरक्षा को बढ़ाना है।
- **एसआईएल 4 मानक:** सुरक्षा अर्धडटा स्तर (एसआईएल) 4 सुरक्षा मानकों का उच्चतम स्तर है, जो दुर्घटनाओं को रोकने और रेलवे परिचालन की सुरक्षा सुनिश्चित करने में प्रणाली की मजबूती पर जोर देता है।
- **निर्यात क्षमता:** प्रणाली की अनुकूलन क्षमता और निर्यात की क्षमता न केवल भारत में रेलवे सुरक्षा में सुधार करती है, बल्कि देश को वैश्विक रेलवे प्रौद्योगिकी बाजार में एक खिलाड़ी के रूप में भी स्थान देती है।
- **अनुप्रयोग:**



Face to Face Centres



30 October, 2023

- **एसपीएडी और ओवरस्पीड रोकथाम:** कवच सिग्नल पासिंग एट डेंजर (एसपीएडी) और ओवरस्पीड घटनाओं को रोकने में मदद करता है।
- **स्वचालित ट्रेन रुकना:** जब किसी अन्य ट्रेन का पता उसी पटरी पर चलता है, तो यह ट्रेन को स्वचालित रूप से रोक सकता है, जिससे टक्कर का खतरा कम होता है।
- **सिग्नल रिले:** कवच लोकोमोटिव को सिग्नल भेजता है, जिससे कम दृश्यता की स्थिति में सुरक्षा में सुधार होता है।
- **गति नियंत्रण:** यदि पायलट गति को नियंत्रित करने में विफल रहता है तो यह स्वचालित रूप से ब्रेक लगाता है, जिससे सुरक्षित संचालन सुनिश्चित होता है।
- **खराब मौसम में सहायता:** कवच लोकोमोटिव पायलटों को घने कोहरे जैसी प्रतिकूल मौसम में ट्रेनें चलाने में सहायता करता है।

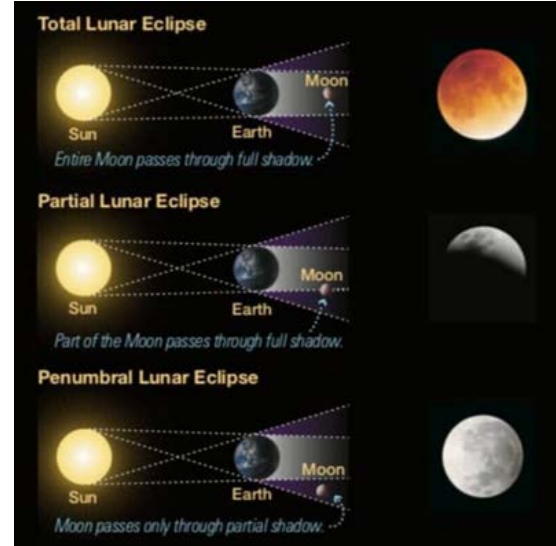
चंद्रग्रहण

संदर्भ: 28 अक्टूबर की रात को, एशिया, यूरोप, अफ्रीका और रूस के क्षेत्रों सहित विशाल क्षेत्र में आंशिक चंद्रग्रहण देखा गया।

- चंद्र ग्रहण तब होता है जब चंद्रमा पृथ्वी की छाया में चला जाता है, और यह केवल पूर्णिमा के दौरान ही हो सकता है।
- चंद्र ग्रहण लगने के लिए पृथ्वी का सूर्य और चंद्रमा के ठीक बीच में होना आवश्यक है।
- ग्रहण तब शुरू होता है जब चंद्रमा पेनुम्ब्रा में प्रवेश करता है, जो पृथ्वी की छाया का एक हिस्सा है जहां सूर्य का सारा प्रकाश अवरुद्ध नहीं होता है। इससे चंद्रमा का कुछ हिस्सा नियमित पूर्णिमा की तुलना में धुंधला दिखाई देता है।
- ग्रहण तब आगे बढ़ता है जब चंद्रमा पृथ्वी की उपछाया में चला जाता है, जहां सूर्य से आने वाला प्रकाश पृथ्वी द्वारा पूरी तरह से अवरुद्ध हो जाता है।
- चंद्र ग्रहण पृथ्वी के चारों ओर चंद्रमा की कक्षा और सूर्य के चारों ओर पृथ्वी की कक्षा का परिणाम है।
- जब पृथ्वी सूर्य और चंद्रमा के बीच आती है, तो यह चंद्रमा की सतह से परावर्तित होने वाली सूर्य की रोशनी को अवरुद्ध कर देती है।
- चंद्रग्रहण के दौरान चंद्रमा धुंधला दिखाई देता है क्योंकि पृथ्वी की छाया उस पर पड़ती है। यह एक अनोखी खगोलीय घटना है जो केवल पूर्णिमा के दौरान ही संभव होती है।

चंद्र ग्रहण के प्रकार

- **पूर्ण चंद्र ग्रहण:**
 - पूर्ण चंद्रग्रहण के दौरान, पृथ्वी की उपछाया, उसकी छाया का मध्य और सबसे गहरा हिस्सा, चंद्रमा की सतह को पूरी तरह से ढक लेता है।
 - हालांकि इसे "पूर्ण" ग्रहण कहा जाता है परंतु इस दौरान चंद्रमा पर कुछ प्रकाश प्रतिबिंब बने रहते हैं, जिससे इसपर पूरी तरह से अंधेरा नहीं होता है।
 - सूर्य का प्रकाश पृथ्वी के वायुमंडल द्वारा अपवर्तित होता है, जिसमें छोटे तरंग दैर्घ्य के रंग बिखर जाते हैं और फ़िल्टर हो जाते हैं, जिससे नारंगी और लाल जैसे रंग चंद्रमा तक पहुंच जाते हैं।
 - पूर्ण चंद्रग्रहण के समय चंद्रमा प्रकाश के अपवर्तन के कारण लाल-नारंगी चमक से प्रकाशित होता है, जिसके कारण ऐसी चंद्र घटनाओं के ऐतिहासिक चित्रण में "ब्लड मून" शब्द का प्रयोग किया जाता है।
- **आंशिक चंद्र ग्रहण:**
 - आंशिक चंद्र ग्रहण तब होता है जब पृथ्वी की छाया चंद्रमा की सतह के केवल एक हिस्से को ढकती है।
 - इसका मतलब है कि चंद्रमा की सतह का एक भाग पृथ्वी की छाया के मध्य, सबसे गहरे भाग से ढका होता है, जिसे छाया कहते हैं, जबकि बाकी पृथ्वी की छाया के बाहरी भाग से ढका होता है, जिसे पेनुम्ब्रा कहते हैं।
- **उपछाया चंद्र ग्रहण:**
 - उपछाया चंद्र ग्रहण में, चंद्रमा पृथ्वी की छाया के हल्के उपछाया भाग से होकर गुजरता है।
 - इस ग्रहण के दौरान, पृथ्वी आंशिक रूप से सूर्य की रोशनी को सीधे चंद्रमा की सतह तक पहुंचने से रोकती है, जिससे चंद्रमा के पूरे या कुछ हिस्से को उसकी छाया के बाहरी क्षेत्र, जिसे पेनुम्ब्रा के रूप में जाना जाता है, से ढक दिया जाता है।
 - पेनुम्ब्रा पृथ्वी की छाया के गहरे रंग के मूल, छाया की तुलना में बहुत धुंधला होता है, जिससे उपछाया ग्रहणों को नियमित पूर्णिमा से अलग करना चुनौतीपूर्ण हो जाता है।
- **ग्रह पारगमन:**
 - ग्रह पारगमन तब होता है जब कोई ग्रह पृथ्वी और सूर्य के बीच घूमता है, जिससे एक खगोलीय संरेखण बनता है।
 - बुध और शुक्र सौर मंडल के एकमात्र ऐसे ग्रह हैं जिन्हें पृथ्वी से सूर्य को पार करते हुए देखा जा सकता है।
 - यह इसलिए संभव है क्योंकि उनकी कक्षाएँ सूर्य के चारों ओर पृथ्वी की कक्षा के अंदर हैं।



Face to Face Centres





NEWS IN BETWEEN THE LINES

राष्ट्रीय पेंशन प्रणाली



हाल ही में, पेंशन फंड नियामक और विकास प्राधिकरण ने नेशनल पेंशन सिस्टम से धन की निकासी के लिए एक नई आवश्यकता पेश की है। नेशनल पेंशन सिस्टम/राष्ट्रीय पेंशन प्रणाली (NPS) के बारे में:

- नेशनल पेंशन सिस्टम (NPS) को केंद्र सरकार ने जनवरी 2004 में सशस्त्र बलों को छोड़कर अन्य लोगों के लिए शुरू किया था।
- 2018 में, केंद्रीय मंत्रिमंडल ने NPS को और अधिक आकर्षक और लाभकारी बनाने के लिए महत्वपूर्ण परिवर्तनों को मंजूरी दी, मुख्य रूप से NPS के तहत केंद्र सरकार के कर्मचारियों के लिए।
- भारत में पेंशन फंड नियामक और विकास प्राधिकरण (PFRDA) द्वारा इसे कार्यान्वित और विनियमित किया जाता है।

पात्रता और लाभार्थी:

- नेशनल पेंशन सिस्टम मई 2009 से सभी भारतीय नागरिकों के लिए उपलब्ध कराया गया था।
- भारत का कोई भी नागरिक, निवासी और गैर-निवासी दोनों, 18-65 वर्ष की आयु वर्ग में एनपीएस में शामिल हो सकते हैं।
- जबकि प्रवासी भारतीय नागरिक (OCI), भारतीय मूल के व्यक्ति (PIO) कार्ड धारक और हिंदू अविभाजित परिवार (HUF) NPS खाते खोलने के पात्र नहीं हैं।

सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान



हाल ही में, सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान्स (SIPs) की अवधि पर 30 साल की सीमा लगाई गई है।

सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान के बारे में:

- सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (SIP) म्यूचुअल फंड द्वारा पेश किया जाने वाला निवेश का एक तरीका है जो व्यक्तियों को एकमुश्त निवेश करने के बजाय, किसी चुनी हुई योजना में नियमित अंतराल (जैसे, मासिक) पर एक निश्चित राशि का निवेश करने की अनुमति देता है।
- सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान की किश्तों की राशि प्रति माह कम से कम ₹500 तक हो सकती है, जो इसे एक आवर्ती जमा के समान बनाती है।
- यह नियमित, छोटे निवेशों के माध्यम से लगातार धनराशि जमा करके वित्तीय लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायता करता है।

सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान के लाभ:

- सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान निवेशकों में निवेश अनुशासन को बढ़ावा देता है।
- यह आम तौर पर ओपन-एंडेड फंडों में आयोजित किया जाता है, जिससे निवेशकों को अपनी सुविधा के अनुसार निवेश और धनराशि निकालने की सुविधा मिलती है।
- SIP अवधि के दौरान या बाद में पूर्ण और आंशिक निकासी की जा सकती है।
- SIP राशि को निवेशक की आवश्यकताओं के अनुसार बढ़ाया या घटाया जा सकता है।

गुडावी पक्षी अभयारण्य

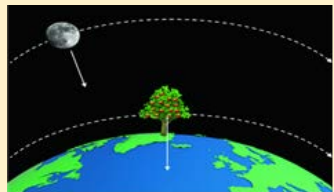


हाल ही में, शोराब तालुक में गुडावी पक्षी अभयारण्य में पक्षियों की मौत की खबरें आई हैं।

गुडावी पक्षी अभयारण्य के बारे में:

- गुडावी पक्षी अभयारण्य भारत के कर्नाटक में स्थित जाने-माने पक्षी अभयारण्यों में से एक है।
- यह गुडावी झील के किनारे स्थित है।
- **जीव:** अभयारण्य में 217 से अधिक पक्षी प्रजातियाँ निवास करती हैं, जिनमें स्थानीय और प्रवासी पक्षी दोनों शामिल हैं जैसे ग्रे हेरॉन, लिटिल कॉर्नॉरेंट, स्पून बिल, लिटिल ग्रेब, स्नेक बर्ड (डार्टर्स), व्हाइट आइबिस और व्हाइट-हेडेड क्रेन आदि।
- **वनस्पति:** गुडावी पक्षी अभयारण्य नम पर्णपाती वन प्रजातियों से घिरा है, जिसमें घास के मैदान, दलदली पौधे और माइक्रोफाइट बायोटा शामिल हैं।

गुरुत्वाकर्षण स्थिरांक



गुरुत्वाकर्षण स्थिरांक के बारे में:

- गुरुत्वाकर्षण स्थिरांक (G) एक मूलभूत भौतिक नियतांक है जो गुरुत्वाकर्षण की समझ में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- यह न्यूटन के गुरुत्वाकर्षण के सार्वभौमिक नियम का आनुपातिक नियतांक है, जो दो पिंडों के बीच गुरुत्वाकर्षण बल का वर्णन करता है।
- यह आइंस्टीन के सामान्य सापेक्षता के सिद्धांत का एक प्रमुख घटक भी है, जो गुरुत्वाकर्षण की एक अधिक सटीक व्याख्या प्रदान करता है, विशेष रूप से चरम स्थितियों में।
- G का मान हेनरी कैवेंडिश द्वारा 1797 में उन प्रयोगों के माध्यम से निर्धारित किया गया था, जिनमें सीसा के गोले के बीच गुरुत्वाकर्षण आकर्षण को मापा गया था।
- आइंस्टीन के सामान्य सापेक्षता के सिद्धांत में, G उन समीकरणों में प्रकट होता है जो द्रव्यमान और ऊर्जा की उपस्थिति में स्पेसटाइम की वक्रता (ताना) का वर्णन करते हैं।
- न्यूटन के गुरुत्वाकर्षण के नियम के अनुसार, गुरुत्वाकर्षण बल दो वस्तुओं के द्रव्यमान के उत्पाद के सीधे आनुपातिक और उनकी दूरी के वर्ग के व्युत्क्रमानुपाती होता है।

Face to Face Centres





30 October, 2023

<p>समाचारों में स्थान</p> <p>सोलोमन इस्लैंड्स</p>	<p>चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के एक प्रतिनिधिमंडल ने हाल ही में सोलोमन द्वीप का दौरा किया और चीन और प्रशांत राष्ट्र के बीच सहयोग को प्रगतिशील बताया।</p> <p>सोलोमन द्वीप (राजधानी: होनियारा)</p> <p>अवस्थिति : सोलोमन द्वीप पापुआ न्यू गिनी के पूर्व में मेलानेशिया में स्थित एक द्वीप राष्ट्र है, जिसमें 990 से अधिक द्वीप शामिल हैं।</p> <p>भूगोल और लोग:</p> <ul style="list-style-type: none"> ➤ देश के भूभाग की विशेषता पहाड़ और घने जंगल हैं। ➤ सोलोमन द्वीप में 90% से अधिक आबादी जातीय मेलनेशियन लोगों से बनी है। <p>ऐतिहासिक पृष्ठभूमि:</p> <ul style="list-style-type: none"> ➤ सोलोमन द्वीप समूह एक समय ब्रिटिश संरक्षित राज्य था। ➤ देश ने 1978 में एक गणतंत्र के रूप में स्वतंत्रता प्राप्त की। <p>भाषा:</p> <ul style="list-style-type: none"> ➤ सोलोमन द्वीप 63 विशिष्ट भाषाओं और कई स्थानीय बोलियों के साथ अपनी भाषाई विविधता के लिए जाना जाता है। <p>आधिकारिक भाषा: अंग्रेजी सोलोमन द्वीप की आधिकारिक भाषा है।</p>
<p>समाचारों में स्थान</p> <p>ब्राज़िल</p>	<p>हाल ही में, नीग्रो नदी में सूखे के कारण ब्राज़ील के मनौस के पास पोंटा दास लाजेस पुरातात्विक स्थल का पता चला।</p> <p>ब्राज़ील (राजधानी: ब्रासीलिया)</p> <p>अवस्थिति : पोंटा दास लाजेस पुरातात्विक स्थल ब्राज़ील के मनौस के ग्रामीण इलाके में स्थित है।</p> <p>राजनीतिक सीमाएँ:</p> <ul style="list-style-type: none"> ➤ ब्राज़ील की सीमाएँ वेनेजुएला, गुयाना, सूरीनाम, फ्रेंच गुयाना, उरुग्वे, अर्जेंटीना, पैराग्वे, बोलीविया, पेरू और कोलंबिया के साथ लगती हैं जबकि इसकी पूर्वी सीमा अटलांटिक महासागर है। <p>भौतिक विशेषताएँ:</p> <ul style="list-style-type: none"> ➤ ग्रह की सबसे लंबी नदियों में से एक, अमेज़न नदी न केवल इस क्षेत्र के लिए एक जीवन रेखा है, बल्कि अत्यधिक महत्व का एक प्राकृतिक आश्चर्य है। ➤ दुनिया का सबसे बड़ा उष्णकटिबंधीय आर्द्रभूमि, पैटानल एक जैव विविधता हॉटस्पॉट और अद्वितीय वन्य जीवन के लिए एक आवश्यक पारिस्थितिकी तंत्र है। ➤ रियो नीग्रो अमेज़न नदी की सबसे बड़ी सहायक नदी है, जो अमेज़न बेसिन में लगभग 14% पानी का योगदान देती है। <p>हालिया खोज:</p> <ul style="list-style-type: none"> ➤ यह पुरातात्विक स्थल हाल ही में नीग्रो नदी में सूखे के बाद उजागर हुआ था। ➤ इस साइट में प्राचीन शैलचित्र हैं। ➤ पुरातत्वविदों का मानना है कि शैलचित्र 1,000 से 2,000 वर्ष पुराने हैं।



POINTS TO PONDER

- ❖ भारतीय प्रतिस्पर्धा आयोग (CCI) किस केंद्रीय मंत्रालय के अधीन एक वैधानिक निकाय है? - **कॉर्पोरेट मामलों का मंत्रालय**
- ❖ पुलिस अनुप्रयोगों के लिए 5G प्रौद्योगिकी के उपयोग पर केंद्रित राष्ट्रीय हैकार्थॉन का क्या नाम है? - **विमर्श 2023**
- ❖ 'थ्री बेसिन समिट' का मेजबान देश कौन सा है? - **कांगो गणराज्य**
- ❖ "कचरे से कला- स्क्रैप से मूर्तिकला" प्रदर्शनी का आयोजन कहाँ किया गया था? - **नई दिल्ली**
- ❖ व्यायाम काज़िंड का 7वां संस्करण कहाँ आयोजित किया जाएगा? - **ओटार, कजाकिस्तान**

Face to Face Centres

